आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 1/मार्च 2022
Received:03/02/2022; Published:24/03/2022

कविताएं

औरत

डॉ.मुक्ता
ई मेल- drmukta8@gmail.com

औरत देखने लगी है सपने विराट समय के
समय, जो औरत के आँसुओ को आँसू रहने दे
आँसू को मोती में न बदले
समय, जो औरत की हँसी को हँसी रहने दे
हँसी को हीरे की कनी में न बदले
समय, जो औरत को बेदखल न करे उसकी आवाज से
आवाज के माध्यम से वह सुनना चाहती है
पृथ्वी के अंकुरण का संगीत
****